



## दशावतार हरिगाथा

प्रलयोदन्वदुदीर्ण-जलविहारा-निविशाङ्गम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ १ ॥

चरमाङ्गोदधृद्दहित-मन्दरतटिनं कूर्मशरीरम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ २ ॥

सित-दंष्ट्रोदधृत-काश्यपतनयम् सूकररूपम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ३ ॥

निशित-प्राग्र-नखेन जित-सुरारिं नरसिंहम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ४ ॥

त्रिपद-व्याप्त-चतुर्दश-भुवनं वामनरूपम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ५ ॥

क्षपित-क्षत्रियवंश-नगधरं भार्गविरामम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ६ ॥

दयिताचोर-निबर्हण-निपुणं राघवरामम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ७ ॥

मुरली-निस्वन-मोहितवनितं यादवकृष्णम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ८ ॥

पटुचाटिकृत-निस्फुट-जननं श्रीघनसंज्ञम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे                   ॥ ९ ॥



परिनिर्मूलित-दुष्टजन-कुलं विष्णुयशोजम् ।

कमलाकान्त-मण्डित-विभवाब्धिं हरिमीडे

॥ १० ॥

अकृतेमां विजयध्वजवरतीर्थे हरिगाथाम् ।

अयते प्रीतिमलं सपदि यया श्रीरमणोयम्

॥ ११ ॥

॥ इति श्री विजयध्वजतीर्थकृता दशावतारहरिगाथा समाप्ता ॥